

PRESS RELEASE: LAUNCHING OF MDL YARD 11880: VAGSHEER

MDL continues to blaze a glorious trail in India's 'Make in India' initiative, with the launching of the sixth Scorpene Submarine of Project-75 today i.e. 20 Apr 2022 by Smt. Veena Ajay Kumar. Dr. Ajay Kumar, IAS, Defence Secretary was the Chief Guest for the event. Post launch, the Submarine will undergo a very comprehensive and rigorous set of tests and trials, for more than a year, to ensure delivery of a fully combat worthy submarine, capable of operation in all modes and regimes of deployment.

Vagsheer is named after the Sand Fish, a deadly deep sea predator of the Indian Ocean. The first Submarine Vagsheer, ex-Russia, was commissioned into the Indian Navy on 26 December 1974, and was decommissioned on 30 April 1997 after almost three decades of yeoman service to the nation. In true nautical tradition, she finds a new incarnation, by the same name. Vagsheer, infused with new life, by Mazagon Dock, once again a very powerful predator of the deep, guarding the vast maritime interests of our nation.

Building the Scorpene Submarine was indeed a challenge for MDL, as the complexity of the simplest of tasks increased exponentially due to all work having to be done in the most congested of spaces. This complexity was further aggravated by the stringent clearances and tolerances, which were required to be achieved, and maintained throughout the period of construction. These challenges were, however, met head-on and successfully overcome by MDL, without any compromise in Quality or performance.

The state-of-art technology utilised in the Scorpene has ensured superior stealth features (such as advanced acoustic absorption techniques, low radiated noise levels, hydro-dynamically optimised shape etc.) and the ability to launch a crippling attack on the enemy using precision guided weapons. The attack can be launched with both torpedoes and tube launched anti-ship missiles, whilst underwater or on surface. The stealth of this potent platform is enhanced by the special attention provided to her characteristic underwater signatures. These stealth features give it an invulnerability, unmatched by most submarines.

Scorpene submarines can undertake multifarious types of missions i.e Anti-Surface warfare, Anti-Submarine warfare, Intelligence gathering, Mine Laying, Area Surveillance etc. The Submarine is designed to operate in all theatres of operation, showcasing interoperability with other components of a Naval Task Force. It is a potent platform, marking a transformational shift in submarine operations.

With the launching of Vagsheer India further cements its position as a Submarine Building Nation and MDL has more than lived up to its reputation as 'Warship and Submarine Builders to the Nation'. This is totally in sync with the current impetus of the Government towards 'Make in India' and 'Atma Nirbhar Bharat'.

Four Submarines of the ongoing Project-75 Scorpene programme at MDL, Kalvari, Khanderi, Karanj and Vela have been commissioned into the Indian Navy. The Fifth Submarine Vagir is under Sea trials phase, whilst sixth and last Submarine will also undergo Sea trials after launching. The Scorpene project would not have achieved the current progress without the unconditional support, course correction and active encouragement of the Department of Defence Production (MoD) and Indian Navy throughout it's various phases of construction.

It is also pertinent to mention that the two SSK submarines built by MDL during 1992 - 1994 are still in active service today, after more than 25 years, which is a testimony to the professionalism and capability of Mazagon Dock personnel. MDL also achieved expertise in submarine refits by successfully executing the Medium Refit-cum-Upgradation of all the four SSK class submarines of the Indian Navy. It is presently carrying out the Medium Refit and Life Certification of INS Shishumar, the first SSK submarine.

MDL has always been at the forefront of the nation's visionary and progressive indigenous warship building programme. In fact, with the construction of varied ranges of combat platforms such as the Leander and Godavari class Frigates, Khukri class Corvettes, Coast Guard OPVs, 1241 RE class Missile Boats, Delhi and Kolkata class Destroyers, Shivalik class Stealth Frigates, SSK submarines and the Scorpene submarines under its belt, the history of modern day MDL is synonymous with indigenous warship and submarine building in India. MDL's contribution to national maritime security and nation building continues with the current ongoing construction of 03 in no. P-15B Visakhapatnam class Destroyers and 04 in no. P-17A Nilgiri class Stealth Frigates.

Being sensitive and aware of the challenges of the future well in time, MDL has undertaken and completed an extensive modernisation programme for its infrastructure and facilities, at the end of which it has 04 Drydocks, 03 Slipways, 02 Wet Basins and more than sixty Thousand square metres of workshop area, with a capacity to build 10 capital warships and 11 submarines simultaneously. This infrastructure is indeed a National Asset.

Buoyed by this, and armed with our rich experience, skilled workforce and strategic location and congenial shipbuilding ecosystem we are ready for undertaking construction of the next generation warships and submarines for the Indian Navy.

प्रेस विज्ञापितः एमडीएल यार्ड 11880 का जलावतरणः वाघपीर

1. एमडीएल द्वारा निर्मित परियोजना-75 की छठवीं स्कोर्पिन पनडुब्बी का जलावतरण श्रीमती वीणा अजय कुमार के करकमलों द्वारा 20 अप्रैल 2022 को सम्पन्न हुआ। डॉ अजय कुमार, आईएएस, रक्षा सचिव, भारत सरकार, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। इस जलावतरण के साथ ही एमडीएल ने 'मेक इन इंडिया' पहल में एक अग्रणी भूमिका निभाई है। जलावतरण के ठीक बाद, एक वर्ष से अधिक समय के लिए, पनडुब्बी को बहुत व्यापक और कठोर टेस्ट और ट्रायल से गुजरना होगा ताकि पूरी तरह से युद्ध योग्य बन सके, और सभी प्रकार से पनडुब्बी संचालन क्षमता जांच कर उसकी डिलीवरी सुनिश्चित की जा सके।

2. वाघपीर का नाम 'सेंट फिश' के नाम पर रखा गया है, जो हिंद महासागर के गहरे पानी की एक घातक मछली है। पहली पनडुब्बी वाघपीर, एक्स- रशिया, को 26 दिसंबर 1974 को भारतीय नौसेना में कमीशनिंग किया गया था और 30 अप्रैल 1997 को राष्ट्र के लिए लगभग तीन दशकों की सेवा के बाद डिक्मीशनिंग कर दिया गया था।

3. स्कोर्पिन पनडुब्बी का निर्माण वास्तव में एमडीएल के लिए एक चुनौती थी, क्योंकि सभी कार्य कम जगहों में करने से सरलतम कार्यों की जटिलता तेजी से बढ़ी थी। इस जटिलता को कठोर मंजूरी और सहनशीलता के कारण और बढ़ा दिया गया था, जिसे निर्माण अवधि के दौरान हासिल करने और बनाए रखने की आवश्यकता थी। हालांकि, गुणवत्ता

या निष्पादन में कोई समझौता किए बिना, इन चुनौतियों का सामना सीधे तौर पर किया गया और एमडीएल द्वारा सफलतापूर्वक दूर किया गया।

4. स्कोर्पिन में उपयोग की गई अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी ने बेहतर स्टेल्थ सुविधाओं को सुनिश्चित किया है (जैसे एडवांन्सड एकाउस्टिक एबसार्बशन टेक्नीक, लो रेडिएटेड न्वाएज लेवल्स, हाइड्रो- डाइनमिकली ऑपटीमाइज्ड शेप इत्यादि) और प्रीसिशन गाइडेड वेपन का उपयोग करते हुए दुश्मन पर गंभीर आक्रमण करने की क्षमता रखता है। आक्रमण तारपीडोस और ट्यूब लॉन्चड एंटी-शिप मिसाइल दोनों के साथ पानी में और सतह पर किया जा सकता है। पानी में इसकी यह विशेषता, स्टेल्थ को एक शक्तिशाली मंच प्रदान करता है और ऐसी विशेषताएँ इसे अभेद्य और बेजोड़ बनाती हैं।

5. स्कोर्पिन पनडुब्बी विविध प्रकार के लक्ष्यों की जिम्मेदारी ले सकती है जैसे एन्टी-सरफेस वारफेयर, एंटी-सबमैरीन वारफेयर, इंटेलिजेन्स गेदरिंग, माइन लेइंग, एरिया सरविलेन्स इत्यादि। पनडुब्बी का रूपांकन सभी प्रकार के परिचालन करने के लिए, नेवेल टास्क फोर्स के अन्य घटकों के इंटरओपरेटिविलिटी को दिखाने के लिए किया गया है। यह एक शक्तिशाली मंच है, जो पनडुब्बी संचालन में परिवर्तनकारी बदलाव को चिन्हित करता है।

6. एमडीएल में निर्मित स्कोर्पिन परियोजना-75 की चार पनडुब्बियाँ कलवरी, खंडेरी, करंज और वेला की कमीशनिंग भारतीय नौसेना को की जा चुकी है। पाँचवी पनडुब्बी वागीर गहन समुद्री परीक्षण के चरण में है। जबकि छठवीं और अंतिम पनडुब्बी जलावतरण के बाद अपना समुद्री परीक्षण पूरा करेगी।

7. यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि एमडीएल द्वारा वर्ष 1992-1994 के दौरान निर्मित दो एसएसके श्रेणी पनडुब्बियां आज भी 25 वर्षों से अधिक समय तक सक्रीय सेवा में हैं जो एमडीएल कर्मचारियों के कौशल तथा क्षमता का प्रमाण हैं। एमडीएल ने भारतीय नौसेना की सभी चार एसएसके श्रेणी पनडुब्बियों के मध्यम पुर्नसज्जा सह उन्नयन के सफल निष्पादन के साथ-साथ पनडुब्बी पुर्नसज्जा में भी विशेषज्ञता प्राप्त किया है। वर्तमान समय में एमडीएल एसएसके श्रेणी की पहली पनडुब्बी आईएनएस शिशुमार की मध्यम पुर्नसज्जा और लाइफ सर्टिफिकेशन का कार्य पूरा कर रहा है।

8. एमडीएल हमेशा राष्ट्र के दूरदर्शी, प्रतिरोधी और प्रगामी स्वदेशी युद्धपोत निर्माण कार्यक्रम में आगे रहा है। वास्तव में, विभिन्न प्रकार के लड़ाकू मंचों के साथ जैसे लीएंडर और गोदावरी श्रेणी युद्धपोत, खुकरी श्रेणी कारवेट्स, तटरक्षक ओपीवीएस, 1241 आरई श्रेणी मिसाइल बोट्स, दिल्ली और कोलकाता श्रेणी विध्वंसक, शिवालिक श्रेणी स्टील्थ विध्वंसक, एसएसके पनडुब्बियां और स्कोर्पिन पनडुब्बी इस क्षेत्र में हैं। एमडीएल का वर्तमान इतिहास भारत में स्वदेशी युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण का पर्याय है। राष्ट्र की समुद्री सुरक्षा और राष्ट्र निर्माण में एमडीएल का योगदान वर्तमान में चल रहे विशाखापत्तनम श्रेणी विध्वंसक पी15बी के तीन पोत और पी17ए के चार पोत नीलगिरी श्रेणी स्टेल्थ युद्धपोत निर्माण के साथ जारी है।

09. ठीक समय पर भविष्य की चुनौतियों के बारे में संवेदनशील और जागरूक होकर, एमडीएल ने अपनी बुनियादी ढांचा और सुविधाओं के लिए एक व्यापक आधुनिकीकरण कार्यक्रम पूरा किया है, जिसमें 04 ड्राईडॉक, 03 स्लिपवे, 02

वेट बेसिन और साठ हजार वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र कार्यशाला के लिए है जो हमें 10 उत्तम युद्धपोत और 11 पण्डुब्बियों का निर्माण करने में एक साथ सक्षम बनाते हैं।

